Teacher's Manual

Carvaan हिंदी

Preparatory Stage

Class 4

MASTERMIND

अध्याय 1
वीर तुम बढ़े चलो (कविता)

कविता-बोध

उ०2. (क) बाल दल। (ख) पथ पर
(ग) सूर्य-चन्द्र के समान

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii)

उ०4. (क) ध्वज कभी झुके नहीं,
दल कभी रूके नहीं,
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

(ख) सूर्य-से बढ़े चलो,
चंद्र-से बढ़े चलो,
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

उ०5. (क) पक्तियाँ कहती हैं कि हमारे सामने चाहे मुसीबतों का पहाड़ ही क्यों न या फिर सिंह जैसे खतरनाक जानवर के दहाड़ने की आवाज हो लेकिन हमें भयभीत न होकर निरंतर लक्ष्य के लिए अपने मार्ग पर निडर बढ़ते रहना चाहिए।

(ख) पंक्तियाँ कहती हैं कि चाहे दिन का उजाला हो या रात का अंधकार हो या फिर कोई आपका साथी न हो और न ही सहायता करने वाला कोई हो, तब भी आपको अपने लक्ष्य के लिए सूर्य एवं चंद्रमा के समान अपने पथ पर बढ़ते रहना चाहिए।

उ०6. (क) हमें सूर्य-चन्द्र के समान आगे बढ़ना चाहिए।

(ग) सूर्य और चंद्रमा का उदाहरण देते हुए कवि ने कहा है कि जिस प्रकार ये निरंतर चलते रहते हैं उसी प्रकार हमारे सामने कोई

भी समस्या क्यों न हो उसे हराकर हमें भी निरन्तर आगे बढ़ना है।

(घ) प्रस्तुत कविता हमें संदेश देती है कि चाहे हमारे सामने कैसी भी कठिन परिस्थिति आ जाए किंतु हम धैर्यपूर्वक तथा निडरता से उसका सामना करते हुए जीवन-पथ पर बढ़ते रहें।

व्याकरण-बोध

उ०2

बकरी	रँभाना
चिड़िया	कूकना
गधा	मिमियाना
गाय	रेंकना
कोयल	चहकना

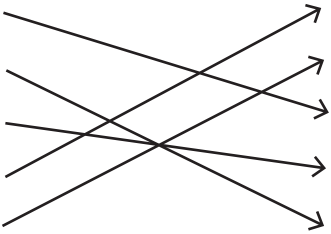

उ०3. अध्यापक	–	अध्यापिका	सिंहनी	–	सिंह
हाथी	–	हथिनी	माली	–	मालिन
धोबिन	–	धोबी	पंडित	–	पंडिताइन

उ०4. वीर – हमारे सैनिक बहुत वीर हैं।
दल – सैनिक दल में रहते हैं।
सिंह – सिंह जंगल में रहता है।
मेघ – मेघ द्वारा बारिश होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

उ० 1. स्वतंत्रता दिवस प्रत्येक वर्ष **15 अगस्त** को मनाया जाता है।
2. भारत **190** साल की परतंत्रता के बाद स्वतंत्र हुआ।
3. भारत की स्वतंत्रता के बाद इसे **भारत** और **पाकिस्तान** दो राष्ट्रों में बाँटा गया।
4. 15 अगस्त के अवसर पर देश को **स्वतंत्रता** दिलाने वाले बलिदानियों को याद किया जाता है।
5. इस दिन भारत के प्रधानमंत्री लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराते हैं।

6. इस दिन भारत में **सरकारी** तथा **निजी** विभागों में पूर्ण अवकाश होता है।
7. स्वतंत्रता दिवस **के** अवसर पर **थल** सेना, **जल** सेना और **वायु** सेना द्वारा परेड निकाली जाती है।
8. स्वतंत्रता दिवस पर स्कूलों, कॉलेजों तथा अन्य संस्थानों में **देशभक्ति कार्यक्रम** और समारोह आयोजित किया जाता है।
9. 15 अगस्त **के** अवसर पर बहुत-से राज्यों में लोग **पतंग** उड़ाकर भी खुशी मनाते हैं।
10. इस दिन सभी **तिरंगे** **के** रंग में रँगे दिखाई देते हैं।

अध्याय 2

आत्मविश्वास का बल

पाठ-बोध

उ०2. (क) सुशांत हार जाने के डर के कारण परेशान था।

(ख) दौड़ प्रतियोगिता के विषय में सोचने के कारण सुशांत का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था।

(ग) आत्मविश्वास को जगाना।

(घ) आत्मविश्वास।

उ०3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०4. (क) दो दिन (ख) प्रतियोगिता (ग) जादुई

(घ) प्रथम (ङ) आश्चर्य, खुशी

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) सुशांत ने दौड़ का अभ्यास किया क्योंकि उसने विद्यालय में होने वाली दौड़ प्रतियोगिता में भाग लिया था।

(ख) सुशांत नाना जी के पास जाकर बैठा।

(ग) नाना जी ने सुशांत को जादुई कविता लिखकर दी।

(घ) आत्मविश्वास के कारण सुशांत प्रतियेगिता जीता।

(ङ) नाना जी ने सुशांत को उसके प्रतियोगिता जीतने के विषय में बताया कि वह अपने आत्म-विश्वास के कारण प्रतियोगिता जीता है न कि किसी जादुई कविता के कारण।

व्याकरण-बोध

उ०1.

कंठ	–	सुकंठ	कुकंठ	फल	–	सुफल	कुफल
जन	–	सुजन	कुजन	प्रबंध	–	सुप्रबंध	कुप्रबंध
रूचि	–	सुरूचि	कुरूचि	पात्र	–	सुपात्र	कुपात्र
भाषी	–	सुभाषी	कुभाषी	संगति	–	सुसंगति	कुसंगति
				पथ	–	सुपथ	कुपथ

उ०2. मान्य – मान्यता

सफल – सफलता

मानव – मानवता

सरल – सरलता

प्रसन्न – प्रसन्नता

लघु – लघुता

विफल – विफलता

प्रभु – प्रभुता

उ०3. (क) ईश्वर को याद करते हैं।

(ख) दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

(ग) दुम दबाकर भाग गया।

(घ) छक्के छुड़ा दिए।

(ङ) आँख मूँद कर सेवा करता है।

उ०4. (क) पढ़ने (ख) बैठे (ग) लिखी

(घ) होगी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

उ०. 1. कविता लिखने वाली– कवयित्री

2. पुरस्कार का पर्याय– इनाम

3. माता का पिता– नाना

4. 'जान सूख जाना' मुहावरे का अर्थ– डर जाना

5. 'थकना' शब्द की भाववाचक संज्ञा– थकावट

6. 'प्रथम' शब्द का विलोम– अंतिम

7. अध्यापक का पर्याय– शिक्षक

8. कहानी के लेखक– कहानीकार

1क	व	यि	त्री	
		2इ	ना	म
3ना	ना			
4ड	र	जा	ना	
	5थ	का	व	ट
6अं	ति	म		
		7शि	क्ष	क
8क	हा	नी	का	र

अध्याय 3
प्रतिभाशाली विल्मा

पाठ-बोध

उ०2. (क) 23 जून, 1940

(ख) विल्मा की माँ गोरे लोगों के यहाँ खाना बनाने, कपड़े धोने तथा सफाई का कार्य करती थी।

(ग) विल्मा ने विल्मा रूडोल्फ फाउंडेशन नाम से संस्था खोली।

(घ) उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि प्रयत्न एवं परिश्रम के द्वारा अक्षम होते हुए भी व्यक्ति सक्षम हो सकता है।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) अपंगता, विकास (ख) अपंग (ग) रंग-भेद

(घ) एक वर्ष (ङ) प्रेरक

उ०5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) विल्मा रुडोल्फ का जन्म 23 जून, 1940 को क्लार्कविले टेनीसी, अमेरिका में हुआ था।

(ख) विल्मा के माता-पिता बहुत ईमानदार तथा मेहनती थे, परंतु बहुत गरीब थे। विल्मा के पिता सामान ढ़ोने का काम करते थे तथा माँ गोरे लोगों के यहाँ खाना बनाने, कपड़े धोने तथा सफाई का कार्य करती थीं।

(ग) विल्मा चेचक, गलगंड, निमोनिया तथा लाल बुखार (स्कार्लेट फीवर) जैसी भयंकर बीमारियों से ग्रस्त थीं।

(घ) विल्मा को विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में आमंत्रित किया जाता था।

(ङ) विल्मा द्वारा खोली गई संस्था का उद्देश्य मुफ्त प्रशिक्षण, पढ़ाई-लिखाई व अन्य सुविधाएँ देना है।

(च) प्रयत्न एवं परिश्रम के द्वारा अक्षम होते हुए भी व्यक्ति सक्षम हो सकता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. राजा–रानी – राजा और रानी

माता–पिता – माता और पिता

देवी–देवता – देवी और देवता

लेखक–लेखिका – लेखक और लेखिका

भाई–बहन – भाई और बहन

कवि–कवयित्री – कवि और कवयित्री

उ०2. बास्केट बॉल, साउथ स्टेट, निमोनिया, पोलियो, डॉक्टर

पेन, स्कूल, पेन्सिल, फोन, बुक

उ०3. (क) अथक (ख) अपंग/विकलांग (ग) अतिथि

(घ) आत्मकथा

उ०4. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

(घ) (ii) (ङ) (ii) (च) (i)

अध्याय 4
एक बूंद

कविता-बोध

उ०2. (क) बूँद

(ख) बूँद सोच रही है कि वह घर छोड़कर क्यों निकली।

(ग) हवा समुंदर की ओर आई।

(घ) कवि अंतिम पंक्तियों में कहता है कि असफलता का भय हमें कहीं-न-कहीं सताता रहता है। हमें अपने कार्य को करने में झिझकना तथा डरना छोड़कर आगे बढ़ना चाहिए।

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।।

उ०5. (क) सोचने फिर-फिर यही मन में लगी,
आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी।।

(ख) बह गई उस काल इक ऐसी हवा,

(ग) एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।।

(घ) लोग यों ही हैं झिझकते सोचते

उ०6. (क) बादलों से निकलने के बाद बूंद अपने मन में सोच रही थी कि वह क्यों अपने घर से निकल गई है।

(ख) बूंद सीप में गिरी और मोती बनी।

(ग) घर छोड़ते समय लोग झिझकते हैं क्योंकि उनके मन में असफलता का भय उन्हें डराता रहता है।

(घ) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है कि जब हम सकारात्मक सोच के साथ कोई कार्य आरंभ करते हैं तो

अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। किंतु असफलता का भय हमें कहीं-न-कहीं सताता रहता है। हमें अपने इस भय को दूर करके अपने कार्य को करना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) से (ख) का (ग) में
(घ) के द्वारा (ङ) के लिए

उ०2. (क) कुछ बूंद आगे बढ़ी।
(ख) सीप का सुंदर मुँह खुला था।
(ग) लोग घर छोड़ रहे हैं।
(घ) हवा समुंदर की ओर बहेगी।
(ङ) बूंद सीप में गिरकर एक सुन्दर मोती बन गई।

उ०3. (क) बूंद – पानी की एक-एक बूंद कीमती है।
(ख) भाग्य – मेहनत से भाग्य को भी बदला जा सकता है।
(ग) हवा – हवा हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन गैस देती है।
(घ) सुंदर – ईश्वर के सभी रूप सुंदर हैं।
(ङ) मोती – सीप में मोती होता है।
(च) मुँह – हमें किसी को अपने मुँह से अपशब्द नहीं बोलने चाहिए।
(छ) सीप – सीप में बहुत सारे मोती होते हैं।

अध्याय 5
मेहनत लाई रंग

पाठ-बोध

उ०2. (क) बरसात के बाद मौसम नई सज-धज के साथ आया।
(ख) चिड़िया
(ग) चिड़े ने चिड़िया के लिए बादल से रंग लाये।
(घ) मेहनत का फल मीठा होता है।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii)

उ०4. (क) नई-नई (ख) दु:ख-दर्द (ग) काजल
(घ) डिबिया (ङ) वर्षा (च) आँखें

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) बूढ़े बरगद ने (ख) कोयल ने (ग) बादल ने
(घ) चिड़े ने (ङ) चिड़िया ने

उ०7. (क) सभी पक्षियों के नए-नए रंगीन पंख उग आए थे। इसलिए वे सभी खुशी से झूम रहे थे।
(ख) मटमैली चिड़िया के पंख इस बार भी मटमैले ही उगे थे। इसलिए वह रो रही थी।
(ग) बरगद ने चिड़े से कोयल से थोड़ा सा काजल माँगने के लिए कहा।
(घ) चिड़ा काजल माँगने आया था इसलिये मैना बड़-बड़ाने लगी।
(ङ) बादल ने खुश होकर चिड़े को इंद्रधनुष के रंग दिये क्योंकि बादल चिड़े की मेहनत से बहुत खुश था।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) असत्य (ख) खट्टा (ग) हानि
(घ) छोटे (ङ) शत्रु

उ०2. (क) आवश्यकता से बहुत कम।

अधिक जनंसख्या में सरकारी योजनाएँ ऊँट में जीरा के समान हो गई हैं।

(ख) होश में आना

जब वह कक्षा में फेल हुआ तब जाकर उसकी आँखें खुलीं।

(ग) खुशी मनाना

बच्चे को नौकरी मिलने पर माता-पिता ने घी के दिये जलाये।

(घ) अत्यधिक ऊँचा

आजकल मकानों के दाम आसमान छू रहे हैं।

उ०3. (क) के (ख) का (ग) में

(घ) से (ङ) के लिए, पर

उ०4.

मोरनी	–	मोर	कवयित्री	–	कवि
डिबिया	–	डिब्बा	चिड़िया	–	चिड़ा
बुढ़िया	–	बूढ़ा	नायिका	–	नायक

उ०5. (क) नई-नई कोपलें फूट निकलीं।

(ख) वे सभी खुशी से झूम रहे थे।

(ग) वहाँ चिड़े का दोस्त था।

(घ) उससे तुम्हारी चिड़िया खुश हो जायेगी।

(ङ) दादा डिबिया तो नहीं लाया।

(च) वह घोंसले में उतर आया।

उ०6. मौसम – म + औ + स् + अ + म् + अ

मटमैली – म् + अ + ट् + अ + म + ऐ + ल् + ई

प्रयास – प् + अ + र् + य + आ + स् + अ

रंगीन – र् + अं + ग् + ई + न् + अ

सहानुभूति – स् + अ + ह् + आ + न् + उ + भ् + ऊ + त् + इ

डिबिया – ड् + इ + ब् + इ + य + आ

उ० मेहनती चींटी, आलसी टिड्डा **साथ रहते थे।** दोनों दोस्त **थे**। चींटी हर वक्त दाने इकट्ठे करती **रहती थी**। टिड्डा सिर्फ गाना गाता **रहता था**। बारिश का समय **आ गया**। चींटी अपने घर में सुरक्षित **थी**। **टिड्डे ने बारिश के लिए कोई तैयारी नहीं की थी इसलिए** टिड्डा परेशान **था**।

अध्याय 6

वास्तविक कलाकार

पाठ-बोध

उ०2. (क) बादशाह अकबर संगीत के बड़े शौकीन थे।

(ख) कोई भी राजमहल के पास से गाता हुआ न निकले। यदि कोई ऐसा करेगा तो उसे तानसेन के साथ गायन-प्रतियोगिता करनी होगी। गायन-प्रतियोगिता में हारने वाले को पाँच वर्षों तक जेल में रहना पड़ेगा।

(ग) बैजू ने बादशाह से कहा, ''महाराज, मैं साधु हूँ। मैं किसी को जेल नहीं भेजना चाहता। कृपया तानसेन को क्षमा कर दीजिए''।

(घ) बैजू बावरा।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)

(घ) (iii)

उ०4. (क) संगीत (ख) अभिमान (ग) रस

(घ) हिरन (ङ) झुक (च) क्षमा

उ०5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓

(घ) ✗ (ङ) ✗ (च) ✓

उ०6. (क) सैनिकों ने (ख) बादशाह ने (ग) वैद्यनाथ ने

(घ) तानसेन ने (ङ) वैद्यनाथ ने (च) बादशाह ने

उ०7. (क) बादशाह ने तानसेन को अमूल्य रत्न घोषित कर रखा था क्योंकि बादशाह तानसेन के संगीत से बहुत प्रभावित थे।

(ख) साधु का गायन सुनकर बादशाह के सैनिक झूमने लगे।

(ग) साधु युवक ने कहा उसका नाम वैद्यनाथ है और लोग उसे बैजू बावरा कहते हैं।

(घ) बैजू बावरा का संगीत सुनकर वहाँ उपस्थित सभी लोग संगीत के रस में डूब गए। जंगली हिरन भी बैजू बावरा के संगीत से खिंचे चले आए।

(ङ) बैजू ने अकबर से तानसेन को क्षमा कर देने के लिये कहा क्योंकि वह किसी को परेशान या दण्ड दिलाना नहीं चाहता था।

(च) सच्चा कलाकार वैद्यनाथ है क्योंकि वह अपनी कला पर अभिमान नहीं करता तथा किसी व्यक्ति को रिझाने के नहीं अपितु प्रभु की भक्ति में गाता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) नींबू खट्टा है।

(ख) वह कुछ दिन से विद्यालय नहीं आया।

(ग) मुझे पाँच किलो आटा ला दो।

(घ) थोड़ा-थोड़ा कार्य रोज याद किया करो।

उ०2. (क) आज्ञाकारी (ख) संगीतज्ञ (ग) सर्वज्ञ

(घ) अमूल्य (ङ) गणितज्ञ

उ०3. बादशाह → अकबर

उच्चकोटि का → संगीतज्ञ

संगीत सम्राट → तानसेन

साधु → बैजू बावरा

निर्जीव → कला

उ०4.

चित्र	–	चित्रकार	संगीत	–	संगीतकार
कला	–	कलाकार	रचना	–	रचनाकार
अधि	–	अधिकार	जय	–	जयकार

उ०5. (क) उससे (ख) अपनी (ग) उसकी

(घ) वे, अपनी (ङ) मुझे (च) हम, उस

उ०6. (क) अकबर संगीत के बड़े शौकीन थे।

(ख) बादशाह उससे बहुत प्रभावित हुआ।

(ग) हम तो भगवान का भजन करते हैं।

(घ) मेरा नाम वैद्‌यनाथ है।

(ङ) तानसेन ने अपना संगीत आरम्भ किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

उ०

मु	फै	जी	रि	क	बू	रो	म	साँ	फ	छु
ल्ला	ल	य	मा	र्व	न	अ	न	त	नौ	ह
ह	ज	का	ल	श	गो	बु	ख	ती	मू	की
दो	त	को	बी	र	ब	ल	य	पी	मा	म
प्या	अ	अ	हा	का	ज	फ	र्या	ग	ड़ी	हु
जा	बु	य	तो	म	तु	ज	मु	ही	ख	क्का
ल	द	टो	ड	र	म	ल	त	ली	स्वी	म
अ	ब्दु	ल	र	ही	म	खा	न	ए	खा	ना
ता	ग्र	ता	मा	पु	न	ख	ऊ	मि	र्व	ल
लि	का	ता	न	से	न	र	न	ती	प	वि
ग	श	वी	सिं	णे	र	रा	ती	तौ	ज	य
ल	मा	ष	ह	कृ	शे	ष्ण	दा	ला	पा	र

अध्याय 7

अगर न होता...

पाठ-बोध

उ०2. (क) चाँद से धरती को शीतलता मिलती है।

(ख) सूरज

(ग) नदियाँ और पर्वत धरती को जल व पर्वत-झीलें देते हैं।

(घ) बादल इन्द्रधनुष बनाते हैं।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) अगर न होता चाँद रात में,
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज दिन को,
सोने-सा चमकाता कौन?

(ख) अगर न होते बादल, नभ में,
इंद्रधनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम, तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) हम रात में दिशा चाँद की मदद से देख पाते हैं।

(ख) जग की प्यास निर्मल नदियाँ बुझती हैं।

(ग) यदि बादल नभ में न होते तो इंद्रधनुष न बनते।

(घ) इंद्रधनुष की रचना वर्षा के बाद होती है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) आम – 1. मुझे आम पसंद है।
2. राजा से आम जनता रोज नहीं मिल सकती थी।

(ख) घट – 1. हमारे शहर में आज एक दुखद घटना घटी।
2. ईश्वर घट-घट के बारे में जानते हैं।

(ग) अंक – 1. आज मेरे गणित में सबसे अधिक अंक आये।
2. इस नाटक के सभी अंक बहुत अच्छे हैं।

(घ) कुल – 1. राम कुल के दीपक थे।
2. सुमन की कक्षा में आज कुल दस ही विद्यार्थी आये थे।

उ०2. अगर – नगर डगर
चमकाता – धमकाता इठलाता
चाँद – माँद साँप
पाता – खाता लाता
सब – अब कब

उ०3. माता-पिता – माता और पिता अन्न-जल – अन्न और जल
दूध-पानी – दूध और पानी खाना-पीना – खाना और पीना
नीले-पीले – नीले और पीले ठंडा-गरम – ठंडा और गरम

उ०4. नदी सरिता सूर्य भानू
बादल वारिद चन्द्र शशि

उ०5. दिन इला मलिन
सवाल

उ०6. (क) उसकी सुन्दर लिखावट सबको पसंद है।
(ख) मेरे पास लाल चश्मा है।
(ग) वह सुनहरी बतख रोज तालाब पर आती है।
(घ) आज ठंडी हवा चल रही है।
(ङ) उसकी लाल फ्रॉक बहुत सुन्दर है।

उ०7. रात – दिन मीठा – खट्टा
प्रश्न – उत्तर आसमान – धरती
स्वच्छ – मलिन भला – बुरा

अध्याय 8
सच्ची सुन्दरता

पाठ-बोध

उ०2. (क) न्यायप्रिय व बुद्धिमान।
(ख) सुन्दरता की बात को लेकर।
(ग) चाणक्य की बात सुनकर।
(घ) गुस्से में

उ०3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)
(घ) (iii)

उ०4. (क) सम्मान (ख) गर्मी (ग) सहमत
(घ) प्यास (ङ) शीतल (च) आंतरिक

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) राजा चंद्रगुप्त बहुत ही सुंदर थे। उनका रंग साफ और शरीर हृष्ट-पुष्ट था। उनके चेहरे पर अपूर्व तेज झलकता था।
(ख) चाणक्य
(ग) चाणक्य ने राजा को क्रोध में देखा तो बोले– "महाराज, इस समय आप आवेश में हैं। ऐसी अवस्था में सत्य और असत्य की पहचान करना कठिन हो जाता है। इसलिए आप शांत हो जाइए। मैं आपके लिए शीतल जल का प्रबंध करता हूँ।"
(घ) सोने की सुराही का पानी पीकर महाराज आग-बबूला हो गए क्योंकि उसका पानी गर्म था।
(ङ) मिट्टी की सुराही की जगह सोने की सुराही से जल पिलवाकर चाणक्य राजा को समझाना चाहते थे कि बाहरी सुन्दरता से अधिक महत्व आंतरिक गुणों का होता है।
(च) हाँ, राजा चंद्रगुप्त ने चाणक्य की बात को स्वीकार किया, जब चाणक्य ने राजा को सोने की सुराही से गर्म पानी व मिट्टी की सुराही से शीतल जल पिलवाया तो राजा को अन्तर समझ आ गया कि असली सुन्दरता आंतरिक गुणों में होती है।

व्याकरण-बोध

उ०1. शीतल → ठंडा
सम्मान → आदर
कुरूप → बदसूरत
भीषण → भयंकर
आवेश → गुस्सा

उ०2.

न्याय+प्रिय	– न्यायप्रिय	बुद्धि+मान	– बुद्धिमान
रूप+वान	– रूपवान	अधि+कार	– अधिकार
प्रधान+मंत्री	– प्रधानमंत्री	महा+राजा	– महाराजा

उ०3. सुराही – स् + उ + र् + आ + ह् + ई
महाराज – म् + अ + ह् + आ + र् + आ + ज् + अ
दरबार – द् + अ + र् + अ + ब् + आ + र् + अ
राजनीति – र् + आ + ज् + अ + न् + ई + त + इ
आवेश – आ + व् + ए + श् + अ

उ०4.

विद्वान	– विद्वती	सेवक	– सेविका
गुरु	– गुरुआईन	राजा	– रानी
महोदय	– महोदया	सेठ	– सेठानी
माली	– मालिन	लेखक	– लेखिका

उ०5. (क) सोना– निद्रा : वह विद्यालय से आकर सोना पसन्द करता है।
धातु : मेरे पास सोने का कलश है।
(ख) मत– वोट : मुझे अपना मत दो।
नहीं : उसे यहाँ मत बुलाओ।
(ग) पात्र– बर्तन : जल चाँदी के पात्र में पीना चाहिए।
रोल : स्नेहा ने रूकमणि का पात्र बहुत अच्छे से किया।
(घ) जल– पानी : कृपया मुझे थोड़ा जल दो।
जलना : कागज आग में डालते ही जल गया।

उ०6.

शुद्ध	– सोने की सुराही	गर्म	– पानी
हृष्ट-पुष्ट	– शरीर	भीषण	– गर्मी
कुशल	– राजनीतिज्ञ		

उ०7. शीतल–उष्ण, शुद्ध–अशुद्ध, अच्छा–बुरा, सेवक–स्वामी, सर्दी–गर्मी, राजा–रंक, सुन्दर–कुरूप, प्रश्न–उत्तर, मूर्ख–विद्वान, सत्य–असत्य।

उ०8. (क) सेवक – सेवक को स्वामी की ईमानदारी से सेवा करनी चाहिए।

(ख) दरबार – दरबार में बहुत से दरबारी थे।

(ग) प्रबंध – दरबार में मनोरंजन के सारे प्रबंध थे।

(घ) सत्य – हमें सदा सत्य बोलना चाहिए।

(ङ) कठिन – कठिन समय में भी ईश्वर में आस्था बनाये रखनी चाहिये।

अध्याय 9

सेवा-भावना

पाठ-बोध

उ०2. (क) फ्लोरेंस के जन्म के समय इनके माता-पिता इटली का भ्रमण कर रहे थे। इसलिए इनका नाम उस शहर के नाम पर रख दिया गया।

(ख) नाइटेंगेल ने शादी से इंकार कर दिया क्योंकि वे पीड़ित व असहाय लोगों का इलाज करना चाहती थीं।

(ग) माता-पिता नहीं चाहते थे कि फ्लोरेंस नर्स बने क्योंकि उस समय अस्पतालों की स्थिति बड़ी दयनीय थी। वे बहुत घुटन भरे, गंदे व साधनविहीन थे, यहाँ तक कि प्रशिक्षित नर्सें भी नहीं होती थीं।

(घ) टर्की में डॉक्टरों ने इनका विरोध किया क्योंकि उनका वहाँ पहुँचना डॉक्टरों को नहीं भाया।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०4. (क) धनी परिवार (ख) नर्सें (ग) बड़ी दयनीय

(घ) भोजन, दवाओं (ङ) 1860, नर्सिंग प्रशिक्षण

(च) रेड-क्रॉस

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) इनका जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 12 मई, 1820 को हुआ था।

(ख) फ्लोरेंस नाइटेंगेल ने साहित्य, संगीत और चित्रकला में उच्च शिक्षा प्राप्त की।

(ग) सन् 1854 में इंग्लैंड, फ्रांस और टर्की से रूस की घमासान लड़ाई हुई। लंदन के एक समाचार पत्र में घायलों की दुर्दशा पर दिल दहला देने वाला एक लेख छपा जिसे पढ़कर नाइटेंगेल रो पड़ीं।

(घ) नाइटेंगेल टर्की घायलों की सेवा करने गईं। वहाँ उन्होंने अपने साथियों की सहायता से घायलों के कपड़े बदले, गंदे कपड़ों को धोया और सहानुभूति के साथ उनकी मरहम-पट्टी की।

(ङ) रात्रि को लैंप लेकर जब वह घायलों को देखने जाती थीं, तो घायलों का आधा दु:ख समाप्त हो जाता था। इसी कारण ये 'लैंप वाली महिला' के नाम से विख्यात हुईं।

(च) फ्लोरेंस नाइटेंगेल नि:स्वार्थ और अथक सेवा का प्रतीक मानी जाती हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. दुर्+गम – दुर्गम – कठिन समय

दुर्+जन – दुर्जन – बुरा व्यक्ति

दुर्+भाव – दुर्भाव – बुरा भाव

दुर्+व्यवहार – दुर्व्यवहार – बुरा व्यवहार

उ०2. (क) सहानुभूति (ख) रास्ता दिखाने वाला

(ग) समय (घ) दूर

उ०3. (क) रहना – बच्चे हमेशा अपने माता-पिता के साथ रहना पसंद करते हैं।

(ख) बाँधना – किसी को गलत बंधन में बांधना उचित नहीं होता।

(ग) माँगना – हर वक्त माँगना अच्छी बात नहीं होती।

(घ) खोलना – श्याम ने डॉक्टर के पास रहकर पट्टी खोलना व बाँधना सीख लिया।

उ०4. (क) इनके (ख) उसकी (ग) उन्हें, अपने

(घ) उनका (ङ) वे

उ०5. अनोखा – अजीब नगर – शहर

दिन – दिवस महीना – माह

विद्यालय	–	पाठशाला	दिल	–	हृदय
वर्ष	–	साल	अंतिम	–	आखिर
प्रयास	–	कोशिश	पुरस्कार	–	इनाम

उ०6.

धनी	–	निर्धन	उच्च	–	निम्न
सुख	–	दुख	ज्ञान	–	अज्ञान
विशेष	–	साधारण	सम्मानित	–	अपमानित
शांति	–	अशांति	विरोध	–	समर्थन

अध्याय 10
यह संसार

पाठ-बोध

उ०2. (क) चिड़िया संसार को अंडे जितना छोटा समझती थी।

(ख) चिड़िया का घर सूखे तिनकों से बना होता है, जिसे घोंसला कहते हैं।

(ग) शाखायें हरी-भरी थी।

(घ) यह बहुत विशाल है।

उ०3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनकों से तैयार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना-सा ही है संसार।।

(ख) आखिर जब मैं आसमान में,
उड़ी दूर तक पंख पसार।
तभी समझ में मेरी आया,
बहुत बड़ा है यह संसार।।

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) कविता की प्रथम पंक्तियों में कहा गया है कि चिड़िया का घर जब अंडे जितने आकार का था तब वह सोचती थी कि संसार बस इतना ही।

(ख) अंडे में रहकर चिड़िया सोचा करती थी कि संसार छोटा सा है।

(ग) चिड़िया का घोंसला सूखे तिनकों से बना था।

(घ) पेड़ की शाखाएँ हरी-भरी थीं।

(ङ) चिड़िया को सबसे अंत में समझ में आया कि संसार बहुत अधिक बड़ा है।

व्याकरण-बोध

उ०1. अंडे जैसा – आकार सागर जैसा – गहरा

दूध जैसा – सफेद बर्फ जैसा – ठंडा

पर्वत जैसा – ऊँचा रूई जैसा – कोमल

उ०2. अंडा – डंडा घर – पर

मेरी – तेरी जब – तब

हरी – भरी पंख – शंख

उ०3. (क) पर तितलियों के पर रंग-बिरंगे होते हैं।

उसने मेरी बात मानी पर अपनी शर्तों पर।

(ख) बस आज मैं बस से विद्‌यालय जाऊँगी।

बस बहुत हुआ, अब मुझे मत रोको।

(ग) जल जल ही जीवन है।

गैस बंद कर दो वरना सब्जी जल जायेगी।

(घ) भाग उसने भी प्रतियोगिता में भाग लिया है।

समस्या आने पर अनोखी हमेशा घर से भाग जाती है।

उ०4. (क) सबसे पहले मेरे घर का आकार अंडे जैसा था।

(ख) फिर मेरा घर सूखे तिनकों से तैयार होकर घोंसला बन गया।

(ग) फिर में सुकुमार और हरी-भरी शाखाओं पर बाहर निकल आयी।

(घ) आखिर में मैं आसमान में पंख पसार कर दूर तक उड़ी।

(ङ) तब मुझे समझ में आया कि यह संसार बहुत बड़ा है।

उ०5. आसमान अंडा

संसार तिनका

शाखा घोंसला

पंख घर

जब आकार

उ०6. अंडा सुकुमार

आसमान तिनका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

उ० 1. यह काले रंग का पक्षी है। इसकी आवाज बहुत मधुर होती है। **कोयल**

2. यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। **मोर**

3. यह विश्व का सबसे छोटा पक्षी है। **हम्मिंग बर्ड**

4. यह विश्व का सबसे बड़ा पक्षी है। **शुतुरमुर्ग**

5. यह विश्व का सबसे तेज तैरने वाला पक्षी है। **पेंग्विन**

6. यह पक्षी शांति का प्रतीक कहलाता है। **कबूतर**

7. यह मांसाहारी पक्षी है। **बाज**

अध्याय 11
कबीर के दोहे

कविता-बोध

उ०2. (क) नहीं (ख) सफलता प्राप्त होती है।
(ग) सुख-दुख दोनों में (घ) सतत् अभ्यास से।

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान ।।
(ख) साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताकै हृदय आप ।।

उ०5. (क) कबीर दास जी कहते हैं कि ईश्वर का स्मरण दुख में सब करते हैं परन्तु सुख में कोई नहीं करता। जो ईश्वर का स्मरण सुख में भी करता है, उसे दुख कभी प्राप्त नहीं होता।
(ख) कबीर दास जी कहते हमें खजूर के पेड़ के समान बड़ा नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार खजूर के पेड़ से न तो पथिक को छाया मिलती है और न ही फल, अतः हमें उपकारी बनाना चाहिए।

उ०6. (क) पहले दोहे में कबीर दास जी ने संदेश दिया है कि हमें अपना कार्य आज ही कर लेना चाहिए। उसे कल पर नहीं टालना चाहिए क्योंकि आने वाले समय का कोई भरोसा नहीं है।
(ख) पत्थर पर निशान से अभिप्राय है कि जिस प्रकार रस्सी के बार-बार रगड़ खाने से पत्थर पर भी निशान बन जाता है। ठीक उसी प्रकार यदि सतत् प्रयास किया जाये तो कोई भी कठिन कार्य किया जा सकता है।
(ग) सच बोलने के बराबर कोई तप नहीं है।
(घ) हमें सुख में भी प्रभु का स्मरण करना चाहिए क्योंकि यदि हम सुख में भी ईश्वर का स्मरण करेंगे तो हमें दुख कभी प्राप्त नहीं होगा।

व्याकरण-बोध

उ०1. परलय – प्रलय | सुमिरन – स्मरण
साँच – सच | काहे – क्यों
रसरी – रस्सी | जाके – जाकर

उ०2. कोय → होय
खजूर → दूर
अब → कब
पाप → आप
सुजान → निसान

उ०3. पढ़ाकू | काक
चालाक | प्रस्तर
बुद्धि

उ०4. सुमिरन – सु+मि+र+न | पंथी – प+ं+थी
प्रलय – प्र+ल+य | झूठ – झू+ठ
जड़मति – ज+ड़+म+ति | छाया – छा+या

उ०5. तप – तपस्या | परलय – भूकम्प
सिल – पत्थर | रसरी – रस्सी
साँच – सच | हिरदय – हृदय
पंथी – यात्री | अति – अत्यधिक

उ०6. (क) में (ख) से (ग) में
(घ) के (ङ) के (च) पर

उ०7. मूर्ख – बुद्धिमान | कल – आज
दुख – सुख | सच – झूठ
बड़ा – छोटा | दूर – पास
पाप – पुण्य | छाया – धूप

उ०8. (क) पल – जीवन पल में ही बदल जाता है।
(ख) तप – तप ही जीवन है।
(ग) सुख – सुख माता-पिता के साथ रहने में ही है।
(घ) फल – मेहनत का फल मीठा होता है।
(ङ) निशान– मेरे पैर पर चोट का निशान बहुत गहरा है।

अध्याय 12

महान व्यक्तित्व

पाठ-बोध

उ०2. (क) मालवीय जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

(ख) पंडित जी

(ग) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

(घ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी का यह प्रसंग हमें सिखाता है कि हम चाहे कितने भी ऊँचे पद पर पहुँच जाएँ, हमें घमंड नहीं करना चाहिए।

उ०3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०4. (क) असमंजस (ख) हतप्रभ (ग) जन्म, कर्म

(घ) आवेश (ङ) क्षमा

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗

(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) सज्जन ने (ख) मदन मोहन मालवीय जी ने

(ग) राजेन्द्र प्रसाद जी ने

उ०7. (क) मालवीय जी हर प्राणी से प्रेम करने वाले, परोपकारी, नियमों के पक्के तथा समाज-सुधारक थे।

(ख) मालवीय जी उपकुलपति का पत्र पढ़कर चिंतित हो गये क्योंकि उनके अनुसार किसी भी ब्राह्मण के लिए पंडित से बढ़कर दूसरी और उपाधि नहीं होती।

(ग) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अपने टूटे हुए पेन को देखकर दुखी हुए क्योंकि वह पेन उन्हें किसी ने उपहारस्वरूप दिया था।

(घ) कुछ ही देर बाद राजेंद्र बाबू को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने तुलसी को बुलाया और प्यार से पूछा– "तुलसी काका! मैंने क्रोध में आकर आपको बहुत कठोर शब्द कहे हैं। क्या आप मुझे क्षमा कर देंगे?

(ङ) राजेन्द्र प्रसाद की बात सुनकर तुलसी की आँखों में आँसू आ गए क्योंकि देश के सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद भी राजेंद्र प्रसाद में लेशमात्र भी घमंड न था।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) माता-पिता का प्रेम अमूल्य है।
हीरा बहुमूल्य रत्न है।

(ख) हर व्यक्ति में कोई न कोई अच्छाई छुपी होती है।
हमें समय-समय पर भलाई के कार्य भी करने चाहिए।

(ग) बच्चे अज्ञ होते हैं।
कक्षा में बार-बार समझाने पर भी जो न समझे वो मूर्ख हैं।

(घ) हमारे भारतीय सैनिकों पर हर हिन्दुस्तानी को गर्व है।
हमें स्वयं पर घमंड नहीं करना चाहिए।

उ०2.

ज्ञान	–	अज्ञान	कार	–	विकार
हित	–	अहित	शेष	–	विशेष
नीति	–	अनीति	देश	–	विदेश
प्रभावी	–	अप्रभावी	पक्ष	–	विपक्ष
दृश्य	–	अदृश्य	ज्ञान	–	विज्ञान
धर्म	–	अधर्म	जय	–	विजय

उ०3.

सज्जन	–	सज्जनता	साहस	–	साहसी
क्रोध	–	क्रोधी	कठोर	–	कठोरता
विनम्र	–	विनम्रता	स्वतंत्र	–	स्वतंत्रता
परोपकार	–	परोपकारी	धन	–	धनी

उ०6. (क) हैं (ख) हैं (ग) हैं
(घ) रहे हैं।

अध्याय 13

कर्मवीर

पाठ-बोध

उ०2. (क) नहीं (ख) आज ही

(ग) जो मेहनत करते हैं (घ) जो समय गंवाते हैं।

उ०3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i)

उ०4. जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं

काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं

आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं

यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं

बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए

वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗

(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) कठिनाई देखकर घबराना नहीं चाहिए।

(ख) कर्मवीर समय को कार्य करके बिताते हैं।

(ग) कर्मवीर व्यक्तियों के जीवन को सफल माना गया है।

(घ) हमें अपने दिन बातें करने में नहीं गँवाने चाहिए।

(ङ) कर्मवीर लोग औरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1.

दल	–	झुंड	समूह	टोली
क्षेत्र	–	इलाका	भूमि	जगह
घट	–	घड़ा	कमी	समाप्ति
पट	–	परदा	कपड़ा	पट्टी
सारंग	–	इन्द्रधनुष	हाथी	भगवान विष्णु
धन	–	संपदा	अनाज	सोना

उ०2. आसमान

सूरज

स्वस्थ

ममता

उ०3. (क) खिलवाना – हमने सबको प्रेम से खाना खिलवाया।

(ख) पढ़वाना – हमें अपने भाई-बहन को मन से पढ़वाना चाहिए।

(ग) धुलवाना – रिया अपनी माँ के साथ कपड़े धुलवाना चाहती है।

(घ) पहुँचवाना – राधा ध्यान से सामान सिया के घर पहुँचवाना।

(ङ) दिखवाना – मुझे माँ को डॉक्टर को दिखवाना है।

(च) पिलवाना – ध्यान से दवाई मरीजों को पिलवाना।

उ०4.

वीवीध	विविध	वीघन	विघ्न
चचल	चंचल	भागय	भाग्य
मुंह	मुँह	नमुना	नमूना

उ०5. (क) जल मूल्यवान है।

आज लापरवाही के कारण सब्जी जल गई।

(ख) काल किसी का इंतजार नहीं करता।

विजय काल के मुँह में जाते-जाते बचा।

अध्याय 14

पत्र-लेखन

पाठ-बोध

उ०2. (क) पत्र प्रज्ञा ने अर्भि को अपनी यात्रा वर्णन के लिये लिखा।

(ख) लाल किले में दो प्रमुख स्थान हैं– 'दीवान-ए-आम' और 'दीवान-ए-खास'।

(ग) लाल

(घ) कनॉट प्लेस में।

उ०3. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०4. (क) आठ (ख) गुरुद्वारा शीश गंज (ग) जमीन

(घ) कनॉट प्लेस

उ०5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓

(घ) ✓

उ०6. (क) लाल किला यमुना नदी के किनारे बना हुआ है और इसका निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था।

(ख) प्रज्ञा ने अजायबघर में मुग़लकाल के अस्त्र, वस्त्र, शस्त्र आदि देखें।

(ग) कनॉट प्लेस बड़ी-बड़ी दुकानों व शोरूम के लिए प्रसिद्ध है।

(घ) चाँदनी चौक, कनॉट प्लेस अजायब घर, लाल किला, गुरुद्वारा शीशगंज आदि।

व्याकरण-बोध

उ०1. विद्या – विद्यार्थी, विद्याहीन, विद्यालय, विद्यावान, विद्यासागर।

बुद्धि – बुद्धिमान, बुद्धिहीन, बुद्धिमत्ता, बुद्धिभ्रष्ट।

फल – परीक्षाफल, कर्मफल, सफल।

उ०2. (क) किला (ख) पत्थर (ग) यमुना

उ०3.	कु	–	कुमार्ग	कुरीति	निर् –	निर्दय	निर्जन
	नि	–	निसार	निराधार	अप –	आपमान	अपकार

उ०4. (क) किनारे – नदी के किनारे मेरा खेत है।

(ख) प्रमुख – मेरे पिताजी गाँव के प्रमुख हैं।

(ग) पवित्र – गंगा पवित्र नदियों में से एक है।

(घ) अनेक – हमारे खेत में अनेक मजदूर काम करते हैं।

अध्याय 15
छेदीलाल के खर्राटे

पाठ-बोध

उ०2. (क) छेदीलाल (ख) साड़ी
(ग) लेखक

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)

उ०4. (क) बच्चों (ख) दफ्तर (ग) छेदीलाल
(घ) विजय (ङ) मेजों

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✗

उ०6. (क) छेदीलाल को सोता हुआ देखकर मच्छर उनके शरीर पर मँडराते थे।

(ख) लेखक ने छेदीलाल को अपने घर उनके खर्राटों का मजा लेने के लिए बुलवाया था।

(ग) छेदीलाल जब लेखक के घर खाने पर गए तो खाने के टेबल पर बैठे-बैठे सो गए। लेखक की पत्नी ने जब जोर से सब्जी लेने के लिए कहा तो वह खुद को संभाल न पाये और उनका मुँह आगे रखी सब्जी के बर्तन में गिर गया। तब लेखक को छेदीलाल का मुँह धुलवाना पड़ा।

(घ) नींद की बात पर भूदेव गुप्ता ने तर्क प्रस्तुत किया तुम ठीक कहते हो। जब तक मेरी बेटी की शादी नहीं हुई थी, मेरा भी यही हाल था। अब तो निंश्चत सोता हूँ।

(ङ) श्यामसिंह की खिसियाहट का कारण था छेदीलाल का खर्राटों के साथ ऑफिस में सोना।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) शान्ति भंग करना
छेदीलाल के खर्राटे सन्नाटे को चीर देते थे।

(ख) हल्का सा चिढ़ा हुआ।
मेरे देर से आने पर माँ मीठी झुँझलाहट दिखाती है।

(ग) परेशान करना।

मच्छर रात को खून पी लेते हैं।

(घ) घमंड दिखाना

छेदीलाल जी अपने पद का घमंड दिखाते हुए सबसे नाक फुलाकर बात करते हैं।

उ०2. (क) खिड़कियाँ (ख) विमानों (ग) झाड़ियाँ

(घ) पुस्तकें (ङ) फाइलें (च) बिमारियाँ

अध्याय 16
पर्यावरण

पाठ-बोध

उ०2. (क) स्वास्थ्य व वृक्षों के विषय में।
(ख) ऑक्सीजन (ग) दादा जी ने पौधे लगाये।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०4. (क) 5 जून (ख) ऑक्सीजन (ग) अमूल्य
(घ) कटाई

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓

उ०6. (क) जीवन के मूल आधार पेड़ हैं।
(ख) वृक्षों की लकड़ी से हमें ईंधन, फल, सब्जी, औषधि आदि अमूल्य वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।
(ग) जंगलों की कटाई के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है, वर्षा में कमी आ गई आदि।
(घ) हम हरियाली को पेड़-पौधे लगाकर बढ़ा सकते हैं।
(ङ) विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) मैंने आपकी पुस्तक नहीं ली।
(ख) मेरी माताजी कल आएँगी।
(ग) माता दुर्गा की पूजा चल रही है।
(घ) पार्क में एक बच्चा खेल रहा है।

उ०2. (क) प्रिय (ख) कठिन (ग) अनर्थ
(घ) अनिच्छा (ङ) अनादर (च) प्रश्न

उ०3. (क) ऑक्सीजन – ऑक्सीजन प्राणवायु है।

	(ख) वायुमंडल	–	वायुमंडल अनेक गैसों से भरा है।
	(ग) वृक्ष	–	वृक्ष अनमोल है।
	(घ) प्रदूषण	–	प्रदूषण मानव ने तेजी से बढ़ा रखा है।

उ०4.	(क) उत्तर	–	दिशा	जवाब
	(ख) कृष्णा	–	काला	गिरधर
	(ग) गुरु	–	अध्यापक	शिक्षक